प्रकाशन तिथि : 15 अगस्त, 2021
प्रेषण तिथि : 19 अगस्त, 2021

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 25 | अंक 11 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

'हम संघ में आए पर अंत तक बने रहे क्या?'

कृतज्ञ संघ ने मनाई अपने पूर्व संघप्रमुख पू. नारायण सिंह जी रेड़ा की जयंती

आप धन्य हैं कि आपको श्री क्षत्रिय युवक संघ का सानिध्य मिला। तन सिंह जी, आयुवान सिंह जी, नारायण सिंह जी के जीवन से आपके जीवन को प्रभावित होने के लिए आपने अपने हृदय के कपाट खोले। हम संघ में आये लेकिन मुख्य बात यह है कि हम अंत तक बने रहे या नहीं। पूज्य नारायण सिंह जी गांव से पढ़ने के लिए बीकानेर गए और 10 वर्ष की उम्र में बीकानेर में ही संघ का पहला शिविर किया। मैट्रिक करने के बाद उनकी सरकारी अध्यापक की नौकरी कोलायत के पास एक गांव में लगी। उसी वर्ष हल्दीघाटी में ओटीसी लगा। उस समय उनकी उम्र 19 वर्ष थी और उसी समय उन्होंने बहुत बड़ा निर्णय कर लिया कि तनसिंह जी से जो जाना जा सकता है, सीखा जा सकता है, प्राप्त किया जा सकता है, धारण किया जा सकता है उसमें यदि मेरी नौकरी बाधा बनती है तो नौकरी को छोड़ दूं। उन्होंने ऐसा ही किया और उसके बाद सदा के लिए तन सिंह जी को समर्पित हो गए, तन सिंह जी के साथ ही रहे। 1962 में पूज्य तनसिंह जी सांसद बने और दिल्ली रहने लगे। तब से लेकर वे जीवन पर्यंत तन सिंह जी की छाया में रहे। परिवार, घर, माता-पिता, गांव आदि सभी पर उन्होंने तन सिंह जी को प्राथमिकता दी। क्योंकि उन्होंने अपने आप से प्रश्न पूछा कि मेरे जीवन का आधार क्या तन सिंह जी के अलावा कोई हैं? चिंतन के पश्चात उनको उत्तर मिला- नहीं। क्या मेरा कल्याण तन सिंह जी के साथ रहने में है? उत्तर मिला -हां। ऐसे प्रश्नों पर चिंतन करते हुए वे जीवन भर प्रयोग करते रहे कि जो मुझे उत्तर मिले वह कहीं गलतफहमी तो नहीं है। उन प्रयोगों से उन्हें बहुत प्रेरणा मिली। श्री क्षत्रिय युवक संघ में बहुत सारे स्वयंसेवक तन सिंह जी के साथ रहे लेकिन उनमें से बहुत कम जीवन पर्यंत तन सिंह जी के साथ रह सके। नारायण सिंह जी के बाद महावीर सिंह जी का नाम मुख्य रूप से लिया जाना चाहिए। यद्यपि वे तन सिंह जी के सानिध्य में बहुत कम रहे लेकिन आंतरिक जुड़ाव उनका इतना था कि अभी भी जब वे उनका वर्णन करते हैं तो गदगद हो जाते हैं। बाड़मेर में आलोक आश्रम में आयोजित पूज्य नारायण सिंह जी जयंती में उपस्थित स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए संघ के माननीय संरक्षक भगवानसिंह रोलसाहबसर ने अपने उद्बोधन में उपरोक्त बात कही। उन्होंने कहा कि नारायण सिंह जी के संबंध में हम सभी जानते हैं कि उनका जन्म कहां हुआ, कब हुआ आदि। किन्तु यह सब बातें इतनी महत्वपूर्ण नहीं हैं जितनी महत्वपूर्ण उनके व्यक्तित्व की वह विशेषता है जिसके कारण हम आज उनकी जयंती मना रहे हैं। जन्मदिन मनाने का वास्तविक अर्थ तो यही है कि हम यह विचार करें कि यह जीवन हमें किस लिए मिला है? क्योंकि केवल अपने और अपने परिवार के लिए जीना तो पशुवत जीवन है। गीता में ऐसे व्यक्ति को चोर कहा गया है क्योंकि भगवान ने जो समय हमें सद्कर्म करने के लिए दिया था वह उसने अपने लिए चुरा लिया है। महावीर सिंह जी की नारायण सिंह जी से भी उनकी गहरी दोस्ती थी। बीकानेर में पढ़ते हुए वे एक ही कमरे में रहते थे।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

चुरू, दौसा व अजमेर जिले की कार्य विस्तार बैठकें

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की कार्यविस्तार बैठकों के तहत 1 अगस्त को चुरू की, 8 अगस्त को दौसा की व 9 अगस्त को अजमेर की बैठक रखी गई। इन बैठकों में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन व श्री प्रताप फाउंडेशन की श्री क्षत्रिय युवक संघ से संबद्धता की जानकारी देते हुए बताया गया कि संघ विशुद्ध रूप से एक शिक्षण पद्धति है जिसमें रजपूती का या क्षत्रियत्व का प्रशिक्षण दिया जाता है। लेकिन समाज संघ से इत्तर अपेक्षाएं भी करता है और उन अपेक्षाओं की पूर्ति के लिए संघ अपने प्रकोष्ठों, आनुषंगिक संगठनों के माध्यम से यथाशक्ति प्रयास करता है। तात्कालिक आवश्यकताओं के अनुरूप ऐसे अनेक प्रयास किए गये और ऐसा ही प्रयास श्री प्रताप फाउंडेशन व श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन है। समाज के राजनीतिक व सामाजिक कार्यकर्ताओं के बीच सामंजस्य के लिए श्री प्रताप फांउडेशन कार्य करता है और समाज के सकारात्मक लोगों को संयोजित कर सकारात्मक क्रियाशीलता को बढाने के लिए श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन कार्य करता है।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

राजस्थान भाजपा के संगठन महामंत्री आए 'संघशक्ति'

राजस्थान भाजपा के संगठन महामंत्री चंद्रशेखर जी 10 अगस्त को माननीय संघप्रमुख श्री से मिलने संघ के केन्द्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' आये एवं विभिन्न विषयों पर चर्चा की। इस अवसर पर श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी एवं विश्व हिंदु परिषद के राष्ट्रीय संपर्क प्रमुख माननीय नरपतसिंह जी शेखावत भी उपस्थित रहे। चर्चा के दौरान समाज के विषयों पर चर्चा करते हुए माननीय महावीर सिंह जी ने कहा कि समाज ऐसा सोचता है कि विगत वर्षों में भाजपा की प्रदेश, जिला व मंडल स्तरीय विभिन्न कार्यकारिणियों व विभिन्न अग्रिम मोर्चों में राजपूत समाज की उपेक्षा की जा रही है। (शेष पृष्ठ 2 पर)

बेलवा, सेतरावा और कोटड़ा नायाणी में प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

कोरोना महामारी के चलते संघ के सामान्य शिविरों का आयोजन संभव नहीं हो पाया। वर्तमान में संक्रमण कम होने एवं सरकारी प्रतिबंधों में शिथिलन के चलते पुनः शिविर लगने प्रारंभ हुए हैं। जोधपुर संभाग ने शुरूआत करते हुए 29 जुलाई से 1 अगस्त तक एक चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन गाजणा माता मंदिर परिसर बेलवा में किया गया। शिविर में पूर्व में दो शिविर कर चुके स्वयंसेवकों को ही कम संख्या में बुलाया गया और ऐसे आमंत्रित स्वयंसेवकों का ही यह शिविर हुआ। शिविर का संचालन संभाग प्रमुख चन्द्रवीर सिंह देणोक ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि संघ का कार्य विशेष कार्य है और उसे करने के लिए विशिष्ट लोगों की आवश्यकता है। ऐसे विशिष्ट बनने के लिए विशिष्ट प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है और यही प्रशिक्षण श्री क्षत्रिय युवक संघ अपने संपर्क में आने वाले लोगों को देता है। कोरोना महामारी के लंबे दौर के बाद इस शिविर का आयोजन हुआ है, इसमें आपने जो प्रशिक्षण पाया है उसे अपने जीवन में उतारने के लिए अभ्यास की निरंतरता को बनाये रखना है एवं इसके लिए जहां रहते हैं वहां शाखा प्रारंभ करनी है।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

पूर्व रावत मालमसिंह जी देवड़ा की जयंती मनाई

जालोर जिले के रानीवाड़ा ठिकाने के पूर्व जागीरदार रावत मालमसिंह की जयंती रानीवाड़ा राजपूत समाज द्वारा 10 अगस्त को राजपूत छात्रावास रानीवाड़ा में मनाई गई। इस अवसर पर उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में बोलते हुए वक्ताओं ने उनके द्वारा समाज में व्याप्त रूढ़ियों को दूर करने का प्रयासों का स्मरण किया। कार्यक्रम में आजादी के बाद समाज बंधुओं की कृषि योग्य भूमि को व्यवस्थित करने के लिए उनके उल्लेखनीय कार्य का स्मरण किया गया जिसके परिणामस्वरूप राजपूतों की जमीनें बची रहीं। क्षेत्र को आर्थिक रूप से सबल बनाने के लिए स्वयं की राजस्व भूमि देकर सेवाड़िया का प्रसिद्ध पशु मेला प्रारंभ करने के उनके निर्णय की जानकारी दी गई। उनसे प्रेरणा लेकर समाज व राष्ट्र के लिए उल्लेखनीय कार्य करने का आह्वान किया गया। इस अवसर पर रावत महेंद्र सिंह बड़गांव, पूर्व मंत्री अर्जुन सिंह देवड़ा, रघुवीर सिंह आजोदर, छैलसिंह रतनपुर, फूल सिंह जाखड़ी सहित सैंकड़ों लोग उपस्थित रहे।

लक्ष्मणगढ़ राजपूत संगठन विस्तार को लेकर किया जनसंपर्क

राजपूत सभा लक्ष्मणगढ़ के संगठन विस्तार को लेकर 8 अगस्त को तहसील अध्यक्ष गजेंद्र सिंह राजास ने क्षेत्र के कुमास जागीर, तुनवा, काछवा में समाज के लोगो से मिलकर विचार विमर्श कर संगठन विस्तार पर चर्चा की। राजास ने कहा कि वर्तमान में लोकतंत्र भीड़तंत्र बन गया है, जहाँ किसी भी समाज को अपनी बात रखने व मनवाने के लिए सिर कटाने की नही बल्कि सिर गिनाने की जरूरत होती है, जिसके लिए संगठन जरूरी है। राजास ने हाल ही में सैनिक कल्याण बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष प्रेम सिंह बाजोर के साथ हुई हरकत की भी निंदा की तथा ऐसा कृत्य करने वालों को ओछी

मानसिकता का बताया। नेछवा पंचायत समिति सदस्य जितेंद्र सिंह कुमास जागीर ने कहा कि किसी भी राजनीतिक दल से पहले घर,परिवार व समाज है, जिसकी सेवा के लिए हमेशा तैयार रहूंगा। इस दौरान काछवा के समाजसेवी भामाशाह रिछपाल सिंह, बजरंग सिंह नरुका, कुमास सरपंच नन्द सिंह, टँवर सिंह, शिक्षाविद विक्रम सिंह, मगन सिंह, गोविंद सिंह, तुनवा से भैरु सिंह, मांगू सिंह, हेम सिंह, डालू सिंह, गोविंद सिंह, चेनसिंह, भंवर सिंह, देवीसिंह, बालसिंह, मदनसिंह ,नारायण सिंह सहित सैंकड़ो लोग मौजूद रहे।

राव चंद्रसेन की जयंती मनाई

अकबर की साम्राज्यवादी नीति का विरोध कर जीवन भर संघर्ष का मार्ग अपनाने वाले राव चन्द्रसेन की आंगल तिथि अनुसार जयंती गोयला सरवाड़ में उनके वंशजों द्वारा 30 जुलाई को मनाई गई। वक्ताओं ने बताया कि राव मालदेव के बाद राव चन्द्रसेन मारवाड़ के शासक बने और उन्होंने अकबर की अधीनता स्वीकार करने से मना कर दिया, परिणाम स्वरुप उन्हें जोधपुर छोड़ना पड़ा। उन्होंने छापामार युद्ध प्रणाली का सहारा लिया और जीवन भर भटकना स्वीकार किया। संसाधनों के अभाव

के बावजूद संघर्ष जारी रखा लेकिन अपनी संप्रभुता को आंच नहीं आने दी। अकबर की केवल घोड़ों पर शाही मोहर (दाग) लगवाने जैसी छोटी शर्त को भी स्वीकार नहीं किया। अपनी संप्रभुता और स्वतंत्रता के प्रति उनका समर्पण हम सबके लिए अनुकरणीय है। भूपेंद्र सिंह जी सावर, पूर्व राव साहब बघेरा, पूर्व राव साहब भिनाय, पूर्व राव साहब बांदनवाड़ा, केकड़ी प्रधान होनहार सिंह जी आदि की गरिमामयी उपस्थिति में संपन्न इस कार्यक्रम में स्थानीय राजपूत सरदारों ने अपनी भागीदारी निभाई।

शेखावाटी की प्रांतीय बैठक

श्री क्षत्रिय युवक संघ के शेखावाटी प्रांत की प्रांतीय बैठक दुर्गा महिला विकास संस्थान नाथावतपुरा सीकर में 1अगस्त को रखी गई जिसमें सम्भाग प्रमुख शिम्भ सिंह जी आसरवा ने शेखावाटी में सांघिक कार्यों को लेकर चर्चा की। बैठक में भंवर सिंह जी नाथावतपुरा, गौरीशंकर जी दीपपुरा, नंद सिंह जी बेड़, घीसू सिंह कासली, गोपाल सिंह ढूंढिया, महेन्द्र सिंह नाथावतपुरा, जुगराज सिंह जुलियासर ,धर्मेंद्र सिंह नाथावतपुरा, बसन्तसिंह गुढा आदि शामिल हुए और शेखावाटी प्रान्त में संघ का कार्य को प्रगति देने पर युवा वर्ग को जिम्मेदारी दी गई और वरिष्ठ लोगों के सहयोग की रूपरेखा तय की गई।

श्री डूंगरगढ में सौंपा ज्ञापन

बीकानेर के श्री डूंगरगढ की क्षत्रिय सभा के अध्यक्ष व पूर्व प्रधान श्री छैलू सिंह शेखावत के नेतृत्व में समाज ने शाहजहांपुर बॉर्डर पर किसान आंदोलन की आड़ में वहां छुपे अराजक तत्वों द्वारा राजस्थान सैनिक कल्याण बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष प्रेम सिंह बाजोर के साथ हुई मारपीट एवं गाड़ी तोड़ने के विरोध में श्रीमान मुख्यमंत्री राजस्थान सरकार को उपखंड अधिकारी श्री डूंगरगढ़ के मार्फत उचित एवं कड़ी कार्रवाई हेतु ज्ञापन सौंपा। इस अवसर पर श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठस्वयं सेवक भरत सिंह सेरुणा और क्षेत्र के गांव पुन्दलसर, झंझेउ, लखासर, जोधसर, नोसरिया, मिम्सरिया, सतासर व श्री डुंगरगढ़ के समाज बंधु उपस्थित रहे।

(पृष्ठ एक का शेष)

चुरू, दौसा... व्यवस्था के प्रति नकारात्मकता को दूर कर उसका समुचित उपयोग करने को प्रेरित करता है। इस मुख्य उद्देश्य के सहायक बिंदुओं के बारे में विस्तार से बताया गया एवं विगत दो वर्षों में इन बिंदुओं के तहत हुए कार्यों की जानकारी दी गई। 9 अगस्त को अजमेर के आदर्श नगर स्थित पीपरोली हाउस में बैठक रखी गई उसमें भी उपरोक्तानुसार चर्चा की गई। दोनों बैठकों के बाद अनौपचारिक चर्चा रखी गई जिसमें उपस्थित लोगों के फाउंडेशन के संबंध में प्रश्नों का निराकरण किया गया एवं संबंधित जिले में किस प्रकार काम किया जा सकता है इस विषय में योजना बनाई गई। दौसा की बैठक के लिए संपर्क एवं व्यवस्था का दायित्व मनोज सिंह राघव व उनके सहयोगियों ने निभाया वहीं अजमेर की बैठक का यह दायित्व विक्रम सिंह सांप्रोदा व उनकी टीम ने निभाया। फाउंडेशन की जानकारी यशवर्धन सिंह व रेवंतसिंह ने साझा की वहीं संचालन श्रवणसिंह बगड़ी ने किया। दौसा की बैठक में संभाग प्रमुख मदनसिंह बामण्या अपनी टीम सहित सहयोगी रहे वहीं अजमेर में प्रांतप्रमुख विजयराजसिंह जालिया ने अपनी टीम सहित सहयोग किया। इसी प्रकार 1 अगस्त को श्री बणीर राजपूत छात्रावास चुरू में चुरू जिले की बैठक रखी गई जिसमें उपरोक्तानुसार चर्चा की गई।

राजस्थान भाजपा... पंचायती राज चुनावों में भी समाज के लोगों को कम टिकटें दी गई। उनको विभिन्न जिलों में मिली टिकटों के तुलनात्मक आंकड़े भी बताये गये। उन्हें बताया गया कि इतिहास के प्रति बदनीयती से काम करते हुए विगत वर्ष राजस्थान के शिक्षा मंत्री द्वारा किए गये पाठ्यक्रम बदलाव का भी भाजपा द्वारा मुखर विरोध नहीं किया गया जबकि विगत भाजपा सरकार द्वारा लागू पाठ्यक्रम को बदला गया था। इसी प्रकार विपक्ष के नाते कानून व्यवस्था के विषयों पर प्रायः बोलने वाले भाजपा नेता जब राजपूत समाज के साथ ऐसी कोई घटना होती है तो मौन हो जाते हैं, इस विषय को लेकर समाज की नाराजगी से भी अवगत करवाया गया। उन्हें बताया गया कि कुछ शरारती तत्व जानबूझकर हमारे इतिहास पुरुषों की जातिगत पहचान को विवादित बनाते हैं और समाज में यह धारणा है कि जातिगत तुष्टिकरण के तहत भाजपा से संबद्ध लोग इसमें सहयोग करते हैं और इस धारणा के कारण भी समाज का भाजपा से दुराव बढ़ता जा रहा है। प्रदेश में भाजपा के बड़े राजपूत नेताओं पर जब विपक्षी दलों द्वारा कोई गलत आरोप लगाये जाते हैं या कोई घटना होती है तो प्रदेश भाजपा की प्रतिक्रिया वैसी नहीं होती जैसी सामान्यतः होनी चाहिए। इन सब बातों को लेकर समाज में आक्रोश है और वह विभिन्न माध्यमों से प्रकट भी होता रहता है। माननीय चन्द्रशेखर जी ने इन विषयों पर पार्टी का पक्ष रखा एवं कहा कि वे निरंतर संवाद बनाये रखने का प्रयास करेंगे जिससे दूरियां बढ़ाने वाले विषयों को ठीक किया जा सके। इस अवसर पर उन्होंने माननीय संघप्रमुख श्री को पुस्तक भेंट की वहीं माननीय संघप्रमुख श्री ने भी उन्हें संघशक्ति व पथप्रेरक के नवीनतम अंक भेंट किए।

बेलवा.. शिविर के दौरान 30 जुलाई को पूर्व संघप्रमुख पूज्य श्री नारायण सिंह जी रेड़ा की जयंती मनाई गई। शिविर के अंतिम दिन केंद्रीय कार्यकारी श्री प्रेम सिंह जी रणधा का सानिध्य प्राप्त हुआ। श्री रणधा ने कहा कि शाखा संघ के प्राण हैं और हमें निर्झर बनने के लिए रोजाना एक घंटे का समय शाखा को देना होगा। शिविर में जोधपुर संभाग के 63 स्वयंसेवकों ने भाग लिया। जोधपुर संभाग में ही प्रोढ़ समाजबंधुओं का एक चार दिवसीय प्रक्षिक्षण शिविर 07 से 10 अगस्त तक श्री सरस्वती महाविद्यालय सेतरावा में सम्पन हुआ। शिवर संचालन केंद्रीय कार्यकारी प्रेम सिंह जी रणधा ने किया। उन्होंने प्रशिक्षण के पश्चात शिविरार्थियों को विदाई देते हुए कहा कि आपने जो कुछ यहां पाया है उसका आगे भी पोषण व रक्षण करना आवश्यक है। इसके लिए संघ के निरंतर संपर्क में रहना तो आवश्यक है ही साथ ही संघ को, संघतत्व को आगे प्रसारित करना भी जरूरी है। यदि हम इसे अपने तक ही रोक कर रख लेते हैं तो यह नष्ट हो जाएगा। इसलिए अपने महत्त्व और दायित्व को समझें और संघ कार्य में निष्ठापूर्वक लगे रहें। शिविर में वरिष्ठ स्वयंसेवक नारायण सिंह जी माणकलाव व बिशन सिंह जी खिरजां का सानिध्य भी शिविरार्थियों को प्राप्त हुआ। शिविर की संख्या 60 रही। गुजरात में सौराष्ट्र कच्छ संभाग के राजकोट प्रांत के अंतर्गत कोटडा नायाणी गांव में 7 से 9 अगस्त तक एक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। यशवीर सिंह थलसर ने शिविर का संचालन करते हुए शिविरार्थियों से कहा कि समाज में एकता लाने और उसे अपने स्वधर्म पालन के मार्ग पर आरूढ़ करने के लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ ही एकमात्र मार्ग है। हम जब संघ से प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं तो हमारा दायित्व समाज, राष्ट्र और मानवता के प्रति बढ़ जाता है। हम पर समाज का ऋण है जिसे हमें चुकाना है। शिविर में कोटडा, राजकोट, सुरेंद्रनगर, वांकानेर, राजपरा गढ़, वल्लभीपुर और भावनगर आदि स्थानों से 56 शिविरार्थी सम्मिलित हुए। शक्ति सिंह कोटड़ा नायाणी ने ग्रामवासियों के साथ मिलकर व्यवस्था में सहयोग किया। गुजरात क्षत्रिय समाज के प्रमुख वासुदेव सिंह गोहिल ने भी अपनी टीम के साथ शिविर की गतिविधियों के संबंध में जानकारी प्राप्त की।

RPSC में अनियमितताओं के खिलाफ दिए मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन

जयपुर

RAS भर्ती परीक्षा 2018 को लेकर विभिन्न प्रकार की अनियमितताएं नित्य प्रति उद्घाटित हो रही हैं। पहले RPSC का एक कर्मचारी आयोग के एक सदस्य के नाम पर 23 लाख की रिश्वत लेते पकड़ा गया, शिक्षा मंत्री श्री गोविंद सिंह डोटासरा पर उनके रिश्तेदारों को साक्षात्कार में लिखित परीक्षा से दुगुने नंबर दिलवाने का आरोप लगे व उनके OBC प्रमाण पत्र की प्रमाणिकता पर भी प्रश्न उठाये गये है उसके बाद पिछले दिनों जोधपुर में 20 लाख के साथ साक्षात्कार में रिश्वत का लेन देन करने वाले दलाल पकड़े गये। इन सब घटनाओं ने राज्य को प्रशासनिक अधिकारी उपलब्ध करवाने वाली सर्वोच्च संस्था की विश्वसनीयता पर प्रश्न चिह्न लगा दिया है, राज्य की प्रशासनिक मशीनरी की संपूर्ण चयन प्रक्रिया संशय के घेरे में आ गई है। इस परीक्षा की तैयारी करने वाले सामान्य विद्यार्थियों व उनके अभिभावकों में निराशा व्याप्त है। ये सब परिस्थितियां सरकार और उसके प्रशासन की विश्वसनीयता के लिए गंभीर आक्षेप हैं। इस अविश्वास, संशय और निराशा के वातावरण को दूर करने के लिए RAS 2018 की संपूर्ण प्रक्रिया की न्यायिक जांच करवा कर जिम्मेदार दोषियों पर सख्त कार्यवाही करने की मांग करते हुए श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के कार्यकर्ताओं द्वारा 2 से 5 अगस्त के बीच सेखाला, खींवसर, केकड़ी, रूपनगढ़, डीडवाना, ओसियां, नोखा, डेगाना, नागौर, जेसलमेर, बीकानेर, सरवाड़, रानीवाड़ा, अजीतगढ़, सेड़वा, शिव, बाड़मेर, लाडनूं, सिणधरी, फतेहगढ़, अराई, चूरू, जसवंतपुरा, रानी, जायल, चौहटन, सुमेरपुर, गुड़ामालानी, बालोतरा, रामसर, धोरीमन्ना, अजमेर, मारवाड़ जंक्शन, बाली, देवली, मकराना, जोधपुर, बापिणी, सावर, श्री डूंगरगढ़, बालेसर, लक्ष्मणगढ़, भिनाय, परबतसर, शिवगंज, सिरोही, नसीराबाद, सिवाना, सोजत, साँचोर, श्रीमाधोपुर, सीकर, गोगुन्दा, कल्याणपुर, देसूरी, मोहनगढ़, बाप, लूणी, लोहावट, पलसाना, गडरा रोड, उदयपुर, मेड़ता, पोकरण, भणियाणा, गिड़ा, रामगढ़, बागोड़ा, पाटोदी, छतरगढ़, जालोर, चित्तोड़गढ़, सायला, जयपुर, डूंगरपुर, आसपुर, साबला, दोवड़ा, सीमलवाड़ा, रायपुर, चिखली, गालियाकोट, सांगवाड़ा आदि स्थानों पर सक्षम अधिकारी के माध्यम से मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन दिए गये।

गंगेश्वर महादेव और रूनज में स्नेहमिलन सम्पन्न

गुजरात में बनासकांठा प्रान्त के अंतर्गत पांसवाल स्थित गंगेश्वर महादेव धाम के प्रांगण में 8 अगस्त को त्रिवेणी संगम कार्यक्रम का आयोजन हुआ। प्रातः 11 से 4 बजे तक सम्पन्न इस कार्यक्रम में संभागप्रमुख विक्रम सिंह कमाणा ने उपस्थित समाजबंधुओं को संबोधित करते हुए कहा कि संघ हमारी संस्कृति, हमारे स्वधर्म और हमारे इतिहास की जानकारी हमारे युवाओं को प्रदान कर रहा है। हम सब भी इसमें सहभागी बनें ताकि समाज और संस्कृति में हो रहे क्षरण को रोका जा सके। कार्यक्रम के दौरान वीर दुर्गादास राठौड़ की जयंती के उपलक्ष में उनका स्मरण करते हुए उनके प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित किए गए। इंद्रजीत सिंह जैतलवासना, राजेन्द्र सिंह भैसाणा, अजीत सिंह कुणघेर, रणजीत सिंह नंदाली ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। संभाग के चारों प्रान्तों के प्रान्त प्रमुख स्वयंसेवकों व समाजबंधुओं सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। इसी प्रकार मध्य गुजरात संभाग के चरोतर प्रान्त के रूनज गांव में भी 8 अगस्त को स्नेहमिलन कार्यक्रम का आयोजन हुआ। संभागप्रमुख दीवान सिंह कानेटी ने उपस्थित स्वयंसेवकों व समाजबंधुओं को संघ के संबंध में विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि समाज में भौतिकवाद के प्रभाव से हमारी युवा पीढ़ी में क्षत्रियोचित संस्कारों का लोप होता जा रहा है। इन संस्कारों के सिंचन के लिए हम सभी को मिलकर प्रयास करने की आवश्यकता है और इसके लिए मार्ग संघ द्वारा उपलब्ध करवाया जा रहा है। उन्होंने गांव में संघ की शाखा प्रारम्भ करने का भी निवेदन किया। जलपा बा कानेटी ने अपने उद्बोधन में मातृशक्ति की समाज जागरण में भूमिका पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में मातृशक्ति की भी उपस्थिति रही। छत्र सिंह रूनज, योगेंद्र सिंह व अरविंद सिंह कानेटी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। बटुक सिंह कानेटी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

जालोर में संघतीर्थ दर्शन : जालोर संभाग के पाली प्रांत के सुमेरपुर मंडल में अलग-अलग स्थानों पर तीन संघतीर्थ दर्शन कार्यक्रम 7 व 8 अगस्त को संपन्न हुए। 7 को कोरटा गांव में आयोजित संघतीर्थ दर्शन कार्यक्रम में प्रांत प्रमुख महोब्बत सिंह धींगाणा तथा सह प्रांत प्रमुख हीर सिंह लोड़ता ने उपस्थित समाजबंधुओं को हीरक जयंती वर्ष तथा उसके अंतर्गत होने वाली गतिविधियों के संबंध में जानकारी प्रदान करते हुए समाज की वर्तमान स्थिति और उसके परिप्रेक्ष्य में संघ कार्य की आवश्यकता पर चर्चा की। 8 को मंडल के सलोदरिया तथा भारून्दा गांव में संघतीर्थ दर्शन कार्यक्रम आयोजित हुए जिसमें ग्रामवासियों ने संघ के उद्देश्य, कार्यप्रणाली और हीरक जयन्ती वर्ष की गतिविधियों के संबंध में जानकारी प्राप्त की। 8 अगस्त को ही खिंदारा में शाखामिलन का कार्यक्रम भी रखा गया।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

श्री रूप सिंह परेउ

श्री रूप सिंह परेउ के राजस्थान ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज अधीनस्थ सेवा में सहायक विकास अधिकारी से **अतिरिक्त विकास अधिकारी (राजपत्रित अधिकारी)** के पद पर पदोन्नति की हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

शुभेच्छु:

नाथू सिंह सरपंच केतू कल्ला | **मगसिंह** गड़ा | **चन्द्रवीर सिंह** भालू | **भेरूसिंह** बेलवा

दिलीपसिंह गड़ा | **मूलसिंह** बैतीणा | **अर्जुन सिंह** जिनजिनयाला | **देवीसिंह** सेतरावा

संपादकीय

माननीयों के मान से सत्ता का संधान

राजस्थान में विगत दिनों एक समाचार ने सूर्खियां बटोरी की राजस्थान सरकार माननीयों पर मेहरबान है। ऐसे माननीय जो प्रायः कहते हैं कि वे माननीय नहीं बल्कि सेवक हैं परंतु मानते सदैव यही है कि संसार में यदि किसी के माननीय होने के अधिकारियों की सूची बनाई जाए तो सबसे ऊपर नाम उनका ही रखा जाना चाहिए। ऐसे ही माननीयों का मान रखने के लिए राजस्थान सरकार ने नई पहल की है और वही पहल समाचारों की सूर्खियां बनी है। वैसे तो ऐसी पहल केवल राजस्थान सरकार ने ही की हो ऐसा नहीं है, प्रायः सभी सरकारें ऐसी पहल करती रहती हैं। वर्तमान वाली भी कर रही हैं और पहले वाली भी करती रहती थीं। माननीय तो माननीय होता है चाहे वह राजस्थान का हो चाहे बिहार का हो चाहे केरल का हो चाहे हिमाचल का। इसीलिए सभी जगह माननीयों का मान रखने के लिए पहल होती ही रहती है। बात जब मान रखने की होती है तब तर्क वितर्क का क्षेत्राधिकार शुन्य हो जाता है और माननीयों का मान चर्चा, विचार विमर्श और बहस से सदैव मुक्त हुआ करता है। इसीलिए राष्ट्र से संबंधित विषयों पर सदनों में बांहें चढा कर एक दूसरे पर केवल वाक्बल से ही नहीं बल्कि बाहूबल से भी चढ़ आने को तैयार रहने वाले माननीय उनके मान के विषय पर सर्वसम्मत हो जाते हैं और उनका मान रखने के लिए बढाये जाने वाले वेतन भत्ते से संबंधित प्रस्ताव बिना बहस के ही पारित हो जाते हैं। बात राजस्थान सरकार की करें तो सरकार अब तक बेघर रहे माननीयों को घर बनाकर दे रही है। आलीशान सुपर लग्जरी 4 बैडरूम वाला घर, जिसमें माननीय के मान को बढ़ाने वाली सभी सुविधाएं मौजूद रहेंगी। आपको बेघर शब्द पर आपत्ति हो सकती है, आप कह सकते हैं कि राजस्थान की राजधानी में तो विधायक निवास बने हुए हैं और वे उनमें रहते हैं तो वे बेघर कैसे हो गये? बात आपकी सही है परंतु रहने को तो ये माननीय विधायक प्रारंभिक दिनों में गवर्नमेंट होस्टल में भी रहा करते थे। लेकिन कालांतर में वह माननीयों को वह रास नहीं आया और फिर अलग से आवास बनाये गये। आज अब वे आवास भी रास आ नहीं रहे हैं इसीलिए तो लग्जीरियस आवास बनाने की आवश्यकता महसूस की गई और उसी आवश्यकता की पूर्ति सरकार करने जा रही है। अभी हुए शिलान्यास के परिणामस्वरूप जो आवास बनेंगे वे 2023 में बनकर तैयार होंगे और इसमें भी एक समस्या है कि क्या पता इस समय के कितने माननीय उस समय भी माननीय रह पायेंगे? ऐसे में वर्तमान माननीयों को क्या फायदा? सरकार तो वर्तमान माननीयों के बलबूते पर टिकी हुई है। एक भी माननीय की भौंहें टेढी होने पर सरकार की कुर्सी के पाये हिलने लगते हैं इसलिए मान तो वर्तमान माननीयों का रखा जाना चाहिए और इसीलिए सरकार ने इस मान की रक्षा के लिए प्रति माननीय 50 हजार रुपये प्रतिमाह आवास भत्ता देने का निर्णय लिया है और यही सुर्खियां बनने जैसी बात है। साथ ही सरकार वे माननीयों को यह सुविधा भी प्रदान की है कि यदि वे राज्य की राजधानी में अपना स्वयं का मकान खरीदना चाहें तो सरकारी योजनाओं के तहत बने 50 लाख के फ्लैट उन्हें 30 लाख रुपये में ही उपलब्ध होंगे। हमारा प्रश्न हो सकता है कि आखिर क्यों सरकार केवल 60 प्रतिशत कीमत पर फ्लैट उपलब्ध करवा रही है तो हमें स्पष्ट हो जाना चाहिए कि यह आपको या मेरे को उपलब्ध थोड़े ही करवाया जा रहा है, यह तो माननीयों के मान को बनाये रखने के लिए सरकार का एक क्षुद्र सा प्रकट प्रयास है। अप्रकट रूप से तो पूरा तंत्र ही माननीयों के मान में संलग्न रहता है। माननीय यदि नहीं मानें तो सरकार नहीं रहती इसलिए सरकार का पूरा जोर माननीयों को रूठने से बचाने के लिए होता है और इसीलिए उनका मान बचाने की कवायद की जाती है। इसी कवायद का ही तो परिणाम है कि पूरी प्रशासनिक मशीनरी माननीयों के मान के रक्षार्थ संलग्न रहती है। यदि माननीय की नजर टेढ़ी हो जाये तो बड़े से बड़े अधिकारी की कुर्सी बदल जाया करती है फिर इस मशीनरी के छोटे कर्मचारियों की तो बिसात ही क्या है? विगत दिनों हमने देखा कि समधी जी की नियम विरुद्ध पद्दोन्नति की जांच का दुस्साहस करने वाले अधिकारी रातों रात रवाना कर दिए गये। इस प्रकार माननीयों का मान आज सर्वोच्च प्राथमिकता पर है और इस प्राथमिकता को बनाये रखना सरकार का प्रथम कर्तव्य माना जाता है।

शाखा अमृत

1 अगस्त को पूज्य तनसिंह जी की डायरी के अवतरण संख्या 360 पर चर्चा करते हुए माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने कहा कि आयु की प्रौढ़ता और बुद्धि की प्रगल्भता में गहरा संबंध होता है। प्रगल्भता का अर्थ है प्रवीणता, कुशलता। वयस्कता आती है तो अनुभव आने के कारण प्रवीणता आती है। प्रौढ़ता में व्यक्ति अपने जीवन के अनुभवों को संजोता है। चाहे शरीर की आयु कम हो तब भी बुद्धि की प्रगल्भता प्राप्त हो सकती है। श्रद्धेय नारायणसिंह जी रेड़ा का उदाहरण हमारे सामने है। कम उम्र में तनसिंह जी के साथ रहने का निर्णय, बिना परम्परागत साधना के यौगिक स्थिति को प्राप्त कर लेना उनकी प्रगल्भ बुद्धि का प्रमाण है। संघ की साधना बालकों में संस्कार द्वारा उनकी बुद्धि को प्रगल्भ बनाती है। आज का वातावरण बिल्कुल प्रतिकूल है इसलिए यह कार्य मुश्किल है। प्राकृतिक कठिनाइयां भी स्वाभाविक है। कम उम्र में चंचल स्वभाव अनुशासनहीनता भी लाता है। न घर में, न विद्यालय में हमारी साधना के अनुकूल वातावरण मिलता है। इसीलिए हमारी साधना कष्टसाध्य (अधिक मेहनत वाली) और धीमी गति की है। जैसे नदी के प्रवाह के विपरीत तैरना मुश्किल होता है वैसी ही हमारी साधना है। साधक के प्रवीण बनने पर ही गति तीव्र हो सकती है। स्वयंसेवकों के प्रश्नों एवं जिज्ञासाओं का उत्तर देते हुए उन्होंने आगे बताया कि हमारे व्यवहार में यदि छिछलापन है तो इसका अर्थ है कि हम अभी साधक बनने में उत्सुक नहीं है। इसलिए हमें अपने लक्ष्य के प्रति गंभीरता लानी चाहिए। संघ जब किसी को अपनाता है तो इसलिए कि उसमें विकास की संभावना देखता है। लेकिन व्यक्तिगत कमी से अथवा परिस्थिति के कारण कोई साधक भटक सकता है। इसलिए जो सजग है, अपने विकास के लिए चिंतित है, आगे वही बढ़ पाएगा क्योंकि साधना जबरदस्ती थोपी नहीं जा सकती।

इसी प्रकार 8 अगस्त को पूज्य श्री की डायरी के 97वें अवतरण पर चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि साधना के क्षेत्र में जब हम पर कोई कष्ट आता है तो इसका अर्थ है कि ईश्वर ने हमारा चयन कर लिया है। उसके दिए हुए कष्ट के कारण और सदुपयोग पर चिंतन करना चाहिए। विरोध और विरोधी तो मात्र साधन है जिससे हमारी दृढ़ता की परीक्षा होती है। किसी व्यक्ति पर हमने विश्वास किया था तो उसके विरोधी या निष्क्रिय होने पर भी पश्चाताप नहीं होना चाहिए। प्रत्येक परिस्थिति को स्वीकार किया जाना चाहिए। प्रारब्ध के कारण जो उथल पुथल होती है उसे प्रसन्नतापूर्वक स्वीकारना चाहिए, उससे विचलित नहीं होना चाहिए। संघ जब से प्रारम्भ हुआ तब से लगातार विरोध हुआ है। आज वे विरोधी कहाँ है, जबकि संघ तो निरंतर बढ़ता जा रहा है। अंतिम परिणाम व्यक्तिगत रूप से व सांघिक रूप से भी हमारे पक्ष में ही आता है इसलिए विरोध से विचलित नहीं होना है। आगे स्वयंसेवकों की जिज्ञासाओं का समाधान करते हुए उन्होंने कहा कि जो समस्या हमने पैदा की है उसे दूर करना भी हमारी ही जिम्मेदारी है। जब हम कमजोर पड़ जाएं तो अपने को प्रबल बनाना है, अपने भाव को प्रबल बनाना है। किसी भी मार्ग में बाधाएं आना स्वाभाविक है। जो इन बाधाओं को पार नहीं करते उनका विकास रुक जाता है। जब हम यह स्वीकार कर लेते हैं कि विपरीत परिस्थिति भगवान ने हमारे विकास के लिए भेजी हैं तो हम सभी बाधाओं को पार कर सकेंगे। निष्काम भाव से कार्य करने वाले पर ही ईश्वर की कृपा होती है। इसलिए हमारा पुरुषार्थ कभी बन्द नहीं होना चाहिए। 29 जुलाई को पूज्य तनसिंह जी रचित सहगीत 'उसके परस बिन' पर चर्चा करते हुए माननीय अजीत सिंह जी धोलेरा ने बताया कि यह गीत आध्यात्मिकता से परिपूर्ण है। किसी भी व्यक्ति, संस्था अथवा समाज का ईश्वरीय तत्व से संपर्क न हो तो उसका अस्तित्व व्यर्थ हो जाता है। पूज्य तनसिंह जी का प्रत्येक कर्म उस ईश्वरीय तत्व की ही अभिव्यक्ति है और श्री क्षत्रिय युवक संघ भी उसी ईश्वरीय तत्व का साकार रूप है। हमारे लिए संघ के निरंतर संपर्क में रहना परम आवश्यक है। जैसे ही हमारा संपर्क टूटता है हमारे जीवन में सूनापन आ जाता है। जागृत व्यक्ति इस सूनेपन को अनुभव कर लेगा और पुनः संपर्क जोड़ने का प्रयास करेगा जबकि बेहोश व्यक्ति निराश होकर माया के वशीभूत होकर ध्येयच्युत हो जाता है। संघ के अनेक स्वयंसेवक भी इसी प्रकार खो जाते हैं। हमारी साधना तभी चलती रह सकती है जब हम जीवन भर संघ में आते रहें और संघ के माध्यम से ईश्वरीय तत्व को प्राप्त करने की ओर बढ़ते रहें।

इसी प्रकार 5 अगस्त को 'मिलेंगे बिखरे हुओं के निशाँ' सहगीत का अर्थबोध करते हुए उन्होंने बताया कि प्रकृति के साम्राज्य में कुछ भी निश्चित नहीं है क्योंकि प्रकृति सदैव परिवर्तनशील है। काल का चक्र सदैव चलता रहता है और उसी के साथ व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का उत्थान और पतन भी होता है। हमारा क्षत्रिय समाज भी कभी सभी दृष्टि से शीर्ष पर था। परंतु आज उसका चतुमुर्खी पतन हुआ है इसे भी हमें स्वीकार करना होगा। पूज्य तनसिंह जी ने इस पतन की अवस्था को पहचानकर उसको बदलने के लिए संघ की स्थापना की। इस गीत में संघ और समाज के भविष्य के प्रति पूज्य श्री का अटल विश्वास अभिव्यक्त हुआ है। बिखरा हुआ समाज पुनः एक होकर उसी ऊंचाई को पुनः छुएगा, पूज्य श्री की यह आशा इस गीत में मुखरित हुई है। इस आशा और विश्वास का हम अपने में संचार करें और समाज में भी प्रतिष्ठापित करें तो ही हम तनसिंह जी के स्वप्न को साकार करने में सहयोगी बन सकेंगे। संघ ईश्वरीय चाह को फलीभूत करने का माध्यम है। इस कार्य में हम सहयोगी बन पाए हैं तो यह ईश्वरीय कृपा से ही सम्भव हुआ है। ऐसे अवसर को हम चूक न जाए इसके लिए सदैव जागृत रहकर कृतज्ञता पूर्वक संघ कार्य में लगे रहें।

राजीव गांधी खेल पुरस्कार अब मेजर ध्यानचंद खेल पुरस्कार

06 अगस्त 2021 को भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने भारत की जनता की जनभावना के अनुरूप देश के सबसे बड़े खेल पुरस्कार 'राजीव गांधी खेल रत्न पुरस्कार' का नाम बदल कर 'मेजर ध्यानचंद खेल रत्न पुरस्कार' करने की घोषणा की है। इस पुरस्कार की स्थापना 1991 में हुई जिसमें एक पदक, एक प्रशस्ति पत्र व 7.5 लाख रुपये नगद दिए जाते हैं। आगामी 29 अगस्त को मेजर ध्यानचंद की जयंती है, आएं जाने उनके बारे में जानेंगे।

मेजर ध्यानचन्द सुपुत्र स्व. श्री समेश्वरदत्त सिंह का जन्म 29 अगस्त, 1905 को इलाहाबाद में एक बैंस राजपूत परिवार में हुआ था । इनके पिता सेना में थे और बाद में झांसी में रहने लग गये । ध्यानचन्द भी 16 वर्ष की आयु में सेना में भर्ती हो गये । इनका नाम तो ध्यान सिंह था पर ऐसी मान्यता है कि वे रात के समय चन्द्रमा के प्रकाश में हॉकी का अभ्यास करते थे इसलिए इनके साथी इनको ध्यान चन्द के नाम से पुकारने लगे। वे सेना में सिपाही के रूप में भर्ती हुए और मेजर की रैंक से रिटायर हुए।

हॉकी के खेल में जो ऊँचाइयाँ उन्होंने छुई, जो कीर्तिमान उन्होंने स्थापित किये, जो दक्षता उन्होंने प्रदर्शित की उसके समकक्ष उदाहरण इतिहास में ढूंढने से भी नहीं मिलता। श्री ध्यानचन्द के बलबूते हमारी टीम ने लगातार तीन (1928, 1932 और 1936) ओलम्पिक स्वर्ण पदक जीते जो अपने आप में एक कीर्तिमान है। 1928 के एमस्टर्डम समर ओलम्पिक में हमारे पूल में ओस्ट्रिया, बेल्जियम, डेनमार्क और स्विट्जरलैण्ड की टीमें थी । 17 मई , 1928 को ऑस्ट्रिया को 6-0 (जिसमें ध्यानचन्द ने 3 गोल दागे) से हराया । दूसरे दिन बेल्जियम को 9-0 से और 20 मई को डेनमार्क को 5-0 (ध्यान चन्द के तीन गोल) से हराया। चौथे मैच में स्विटजरलैण्ड को 6-0 से हराया जिनमें ध्यानचन्द ने 4 गोल दागे। 26 मई को फाइनल में नीदरलैण्ड को 3-0 से हराकर देश के लिए पहला ओलम्पिक स्वर्ण पदक जीता। इन पाँच मैचों में ध्यानचन्द ने 14 गोल किये। इस पर एक समाचार-पत्र ने लिखा- 'यह हॉकी का खेल नहीं बल्कि जादूगरी है।' ध्यानचन्द के भाई रूप सिंह भी इस टीम में खेले। वे भी उम्दा खिलाड़ी थे। 1932 के ओलंपिक में तो इन्होंने ध्यानचंद जी को भी गोल स्कोर में पीछे छोड़ दिया था। 1932 के लॉस एन्जिलिस ओलम्पिक का पहला मैच जापान से खेला और 11-1 से जीत हासिल की। आखिरी मैच USS के खिलाफ 24-1 से जीता जो उस समय का विश्व रिकार्ड था। वहाँ के एक समाचार पत्र में लिखा- 'भारतीय टीम एक पूर्व दिशा से आये तूफान की तरह थी जिसने सभी प्रतिद्वन्दियों को धराशायी कर अमेरिका की टीम को उखाड़ फैंका।'

1936 के ओलम्पिक से पहले 1934 में कई राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय अभ्यास मैच खेले गये। कुल मिलाकर 48 मैच खेले और सभी जीते जिनमें हमारी टीम ने 584 गोल दागे और मात्र 40 गोल खाये । इन 48 मैचों में से ध्यानचन्द 43 में खेले और 201 गोल अकेले ने दागे। 1935 में अभ्यास मैचों की श्रृंखला खेलते हुए वे 13 जुलाई को बर्लिन पहुंचे। 17 जुलाई को एक अभ्यास मैच जर्मनी के विरुद्ध खेला और बदकिस्मती से 4-1 से हार गये जिसका सदमा काफी लम्बे समय तक रहा। 1936 के बर्लिन ओलम्पिक का पहला मैच 05 अगस्त को हंगरी से 4-0 से जीत लिया। इसी तरह शेष मैच USA से 7-0, जापान से 9-0 और सेमीफाइनल में फ्रान्स से 10-0 से जीत लिया। दूसरे पूल से जर्मन टीम जीत कर फाइनल में पहुंची। इस तरह 1936 के बर्लिन ओलंपिक के लिए भारत और जर्मनी की टीम के बीच 15 अगस्त के दिन फाइनल मैच खेला गया। पहले अभ्यास मैच में हार चुकी भारतीय टीम के हौसले जितने पस्त थे उतने ही जर्मन टीम के हौसले बुलन्द। मैच शुरू हुआ, हाफ टाइम तक हमारी टीम केवल एक गोल कर सकी। इसके बाद पूरे जोश के साथ आक्रामक मुद्रा में खेलना शुरू किया और आसानी से जर्मन टीम को 8-1 से हरा कर बर्लिन ओलम्पिक का स्वर्ण पदक भी अपनी झोली में डाल एक और रिकार्ड कायम किया। इस ओलम्पिक जीत के बाद ध्यानचन्द का ज्यादा समय 'सेना सेवा' में बीता, दूसरे विश्व युद्ध के बाद 1945 में ध्यानचन्द ने एक युवा टीम को तैयार करने का काम शुरू किया। 1947 में एशियन स्पोर्टस एसोसिएशन ने इण्डियन हॉकी फेडरेशन से गुजारिश की कि वह कुछ मैचों की श्रृंखला खेलने के लिए टीम भेजे जिसमें ध्यानचन्द के होने की शर्त रखी । ध्यानचन्द की कप्तानी में यह टीम 15 दिसम्बर को मोम्बासा पहुंची। वहाँ नौ मैच खेले और सभी में विजयी रही। 1948 में ईस्ट अफ्रीका से आने के बाद ध्यानचन्द ने धीरे - धीरे हॉकी से संन्यास लेना शुरू कर दिया। कुछ एग्जीबिशन मैच खेले। एक मैच 1948 की सम्भावित टीम से भी खेला जिसमें इनकी टीम 2-1 से हार गई। ध्यानचन्द का अंतिम मैच बंगाल के विरुद्ध खेला गया जो बिना हार जीत के फैसले के समाप्त हो गया । बंगाल एसोसिएशन ने ध्यान चन्द और उनके योगदान का सम्मान करने के लिए एक विशाल जन समारोह का आयोजन किया था। मेजर ध्यानचन्द सेना से 1956 में रिटायर्ड हुए। इसी वर्ष उनको 'पद्मभूषण' से नवाजा गया । सेना से सेवा निवृत्ति के बाद लम्बे समय तक वे हॉकी के कोच रहे, 03 दिसम्बर, 1979 को मेजर ध्यानचन्द ने एम्स में आखरी सांस ली। झांसी के हीरोज ग्राउण्ड में पंजाब रेजीमेण्ट की उपस्थिति में भारी जन समूह ने नम आँखों से हॉकी के जादूगर को आखिरी विदाई दी। ध्यानचन्द का पार्थिव शरीर पंच तत्व में समा गया परन्तु आज स्मृतियों में शेष है उनकी खेल भावना, उनका खेलप्रेम, राष्ट्र प्रेम, निष्ठा, स्वाभिमान और जादूगरी । कृतज्ञ राष्ट्र , 29 अगस्त (उनका जन्म दिन) को उनके सम्मान में 'राष्ट्रीय खेल दिवस' के रूप में मनाता है । 2012 में उनको जैम ऑफ इण्डिया अवार्ड प्रदान किया गया जिसको उनके पुत्र अशोक को सौंपा गया। यह अवार्ड जर्नलिस्ट एसोसिएशन ऑफ इण्डिया द्वारा दिया गया। मेजर ध्यानचन्द के नाम पर वर्ष 2002 से खेलों में विशेष योगदान के लिए 'ध्यान चन्द अवार्ड' दिया जा रहा है । दिल्ली के नेशनल स्टेडियम का नाम बदलकर 2002 में ध्यानचन्द नेशनल स्टेडियम रखा गया है। लन्दन में जिमखाना क्लब के एस्ट्रोटर्फ पिच का नाम ध्यानचन्द रखा गया है। 25 जुलाई, 2015 को ब्रिटिश संसद के हाऊस ऑफ कॉमन्स ने मेजर ध्यानचन्द को 'भारत गौरव' के पुरस्कार से सम्मानित किया। पहले भी लन्दन ओलम्पिक 2012 के दौरान मेट्रो स्टेशन का नाम ध्यानचन्द रखा गया। कुल मिलाकर उन्होंने 1926 से 1948 तक 500 से अधिक गोल दागे।

कुछ रोचक घटनाएँ : 1936 के बर्लिन ओलम्पिक के दौरान जर्मनी से खेलते समय गति से खेलने के लिए अपने स्पाइक शूज और स्टाकिंग्स निकाल दिये थे और नंगे पैर खेले । एक समय की घटना है कि हॉकी खेलते हुए बहुत प्रयत्न करने पर भी ध्यानचन्द गोल नहीं दाग सके तो उन्होंने शिकायत की कि गोल पोस्ट को नापा जाए। नापने पर गलती पकड़ी गई । ऐसा बताया जाता है कि हिटलर ध्यानचन्द के खेल से इतना प्रभावित हुआ कि उसने ध्यानचन्द को प्रस्ताव दिया कि अगर वे जर्मन टीम में आना चाहते हैं तो उनको कर्नल की रैंक दे दी जायेगी परन्तु ध्यानचन्द ने प्रस्ताव ठुकरा दिया । 1936 में जर्मनी के साथ एक अभ्यास मैच में जर्मन गोल कीपर ने ध्यानचन्द को टक्कर मार दी जिससे ध्यानचन्द का दांत टूट गया । चिकित्सा करा कर वापस लौटने पर अपने साथी खिलाड़ियों के साथ तय किया कि जर्मनी को सबक सिखाना चाहिए । इसके लिए गोल नहीं करने का निर्णय लिया । अब वे बॉल लेकर जर्मन गोल पोस्ट पर जाते वहाँ पर जाकर बिना गोल दागे वापस लौट आते। क्रिकेट के महान खिलाड़ी डॉन ब्राडमैन का 1935 में एडेलेड आस्ट्रेलिया में ध्यानचन्द से मिलना हुआ । उसने ध्यानचन्द की प्रशंसा करते हुए कहा कि वे ऐसे गोल दागते हैं जैसे क्रिकेट में रन स्कोर किये जाते हैं । विएना (ऑस्ट्रिया) के निवासियों ने ध्यानचंद का एक स्टेच्यू स्थापित किया । जिसके चार हाथ और चारों हाथों में हॉकी स्टिक पकड़ी हुई थी। नीदरलैण्ड में खेल अधिकारियों ने ध्यानचन्द की स्टिक तुड़वा कर देखी कि इसमें कहीं चुम्बक या और कोई डिवाइस तो फिट नहीं कर रखी है जो ध्यानचन्द का बॉल कण्ट्रोल करने में मदद करती हो। ऐसा भी बताते हैं कि ध्यानचन्द रेल की पटरी पर बॉल कण्ट्रोल करने के लिए तेज दौड़ते हुए अभ्यास करते थे वो भी चन्द्रमा के प्रकाश में। देश के इस महान खेल रत्न के लिए उनके प्रशंसकों को अभी भी 'भारत रत्न' दिए जाने का इंतजार है। – **कर्नल हिम्मत सिंह पीह**

केन्द्रीय एवं संभागीय समीक्षा बैठकें

नियमित संघकार्य की समीक्षा एवं योजना के लिए सहयोगियों की वर्चुअल समीक्षा बैठकें नियमित जारी हैं। 3 अगस्त को संभाग प्रमुखों व केन्द्रीय कार्यकारियों के साथ माननीय संघप्रमुख श्री की बैठक हुई। उसमें विगत माह हुए संघकार्य की समीक्षा की गई एवं अगस्त माह की कार्ययोजना बनाई गई। श्रद्धेय दुगार्दास जयंती पर आंग्ल तिथि से पंचांग तिथि को जयंती तक प्रतिदिन भौतिक एवं वर्चुअल कार्यक्रम करने की सहमति बनी। अगस्त माह में लगने वाले शिविरों को लेकर भी चर्चा हुई। 3 अगस्त के बाद संभाग प्रमुखों ने अपने अपने संभागों में प्रांतप्रमुखों व संभागीय सहयोगियों से बैठक कर केन्द्रीय बैठक के निर्णयों से अवगत करवाया एवं तद्नुसार योजनाएं बनाई। इसी प्रकार माननीय संघप्रमुख श्री के साथ संभागवार संभागीय व प्रांतीय सहयोगियों की बैठकों की श्रृंखला भी 6 अगस्त से प्रारंभ हुई। 6 को बाड़मेर, 7 को जैसलमेर, 8 को नागौर, मेवाड़-मालवा, मेवाड़- वागड़, 9 को बालोतरा, 10 जालोर संभाग की बैठक रखी गई। इन बैठकों में संघप्रमुख श्री ने प्रत्येक सहयोगी से उसको दिए दायित्व के बारे में जाना और तत्संबंधी बातचीत की।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

'हम संघ में आए पर अंत तक बने रहे क्या?'

(पेज एक से लगातार)

उस समय तन सिंह जी को कहीं से सूचना मिली की महावीर सिंह जी और नारायण सिंह जी में कुछ अनबन चल रही है। तन सिंह जी ने तुरंत दोनों को सामूहिक पत्र लिखा। दोनों ने साथ में बैठकर पढ़ा तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ कि हमारे बीच तो ऐसा कुछ भी नहीं है। तनसिंह जी और संघ से मेरा संपर्क तो बहुत बाद में हुआ इसलिए प्रारंभिक जानकारी जितनी महावीर सिंह जी को है मुझे नहीं है। मैंने 1961 में चूरू के एक शिविर में पहली बार तन सिंह जी और नारायण सिंह जी को देखा। उस समय नारायण सिंह जी के प्रति तो आकर्षण नहीं पैदा हुआ लेकिन तन सिंह जी को देखकर मैं अभिभूत हो गया। नारायण सिंह जी 1962 में संघशक्ति के संपादक बनाए गए। उस समय मैं जयपुर पढ़ता था तो महीने में दो-चार दिन के लिए वे मिला करते थे। उस समय हमारी मित्रता हो गई। लगता था यह मेरे बड़े भाई हैं, वह भी मुझे छोटे भाई की भांति प्रेम करते थे, हंसी ठिठोली करते थे। बाद में पता चला कि मेरे से ही नहीं बल्कि जो भी उनके संपर्क में आते थे वे उनसे उसी प्रकार से अपनत्व रखते थे। आज भी ऐसे अनेकों लोग मिल जाएंगे जो चाहे शिविर में नहीं आते हों लेकिन नारायण सिंह जी से अत्यधिक प्रभावित थे। साधारण कद काठी, साधारण परिवार, सामान्य आर्थिक स्थिति लेकिन अंदर छिपी हुई प्रतिभा अभी तक प्रस्फुटित नहीं हुई थी। 1969 में बोरुंदा ओटीसी के दौरान चुनाव के द्वारा उन्हें संघ प्रमुख बनाया गया। 1969 से 1979 तक तन सिंह जी की छत्रछाया में संघ प्रमुख रहे लेकिन कभी अपने आप को संघ प्रमुख की जगह पर खड़ा नहीं किया। हमेशा साधारण स्वयंसेवक या घटनायक होते थे। अधिक से अधिक विस्तारक की जगह पर खड़े हो जाते थे लेकिन कभी सामने खड़े नहीं हुए। तन सिंह जी के देहांत के बाद ही वे संघ प्रमुख के स्थान पर खड़े हुए। एक और घटना मुझे याद आ रही है। जोधपुर के बालसमंद में ओटीसी लगा था तो तन सिंह जी ने नारायण सिंह जी को कहा कि आदर्श स्वयंसेवक के गुण का प्रवचन तुम दोगे तो उन्होंने स्पष्ट इंकार कर दिया था। कारण दिया कि क्योंकि मैं आदर्श स्वयंसेवक अभी हूं नहीं और आप के रहते दूसरा कौन है जो आदर्श क्या है यह बता सके? जब तक तन सिंह जी रहे यह बौद्धिक उन्होंने नहीं दिया दूसरे बौद्धिक जरूर दिये। पहले वर्ष भर में 5 से 10 शिविर लगा करते थे लेकिन संघ प्रमुख का दायित्व संभालने के पश्चात नारायण सिंह जी ने इतनी कर्मठता से कार्य किया कि 1971 में संघ के 41 शिविर लगे। उनका मन कभी संघ कार्य से थका नहीं। हम थोड़ा सा कार्य करके ही थक जाते हैं। तन सिंह जी कई बार उनको घर भेजते थे कि माता-पिता से मिलकर आ जाओ तो जितना कहा उतना ही करते थे। माता-पिता से मिलकर अगले ही दिन वापस आ जाते थे। पत्नी-बच्चों से भी इसलिए नहीं मिल के आये कि तनसिंह जी ने ऐसा कहा नहीं था। इस प्रकार अपने आप पर बंदिश लगाने वाला, आत्मानुशासन में अपने आप को बांधने वाला ही जयंती मनाने के योग्य बन पाता है और इसीलिए हम आज उनकी जयंती मना रहे हैं। माननीय संघ प्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्यांकाबास ने सोशल मीडिया के माध्यम से प्रसारित अपने वर्चुअल उद्बोधन में पूज्य नारायण सिंह जी को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए कहा कि अनगिनत क्षत्रिय जिन्होंने अपने धर्म और कर्तव्य से बढ़कर कुछ भी नहीं माना- वही क्षात्र धर्म के पालक हो सके और हो सकते हैं। ऐसे ही क्षत्रिय नारायण सिंह जी की

जयंती आज हम मना रहे हैं। उनकी ऐसी अद्भुत निष्ठा थी कि एक बार जिस ध्येय को पकड़ लिया तो फिर कोई भी परिस्थिति उन्हें विचलित न कर सके। ऐसा आत्मविश्वास और दृढ़ संकल्प, कि अपने जीवन का फैसला कुछ ही क्षणों में कर लिया। ऐसा विश्वास और श्रद्धा- जहां संशय नाम का कोई शब्द नहीं। ऐसी एकनिष्ठता कि लक्ष्य के अतिरिक्त अन्य कोई विचार ही मन में ना आए। ऐसी आश्वस्तता कि जैसे कोई बच्चा अपनी मां की गोद में सोए हुए आश्वस्त रहता है। ऐसे वीतरागी कि संसार में रहते हुए भी संसार से निर्लिप्त रहे। ऐसी साधना कि अपने साध्य को प्राप्त करके ही विश्राम लिया। देवताओं के लिए भी दुर्लभ इस मानव तन को पाने का महत्व बहुत कम लोग समझ पाते हैं और उनमें से भी बहुत कम इसका सार्थक उपयोग कर पाते हैं। नारायण सिंह जी का जीवन एक ऐसी यात्रा की कहानी है जो साधारणता से प्रारंभ होती है और विशिष्टता की ओर बढ़ती है। 30 जुलाई 1940 को मंगलवार के दिन उनका जन्म गांव में रहने वाले एक मध्यमवर्गीय राजपूत परिवार में हुआ। चुरू जिले की सुजानगढ़ तहसील का रेड़ा गांव उनका जन्म स्थान था। दसवीं तक की शिक्षा उन्होंने बीकानेर में प्राप्त की। पढ़ने में होशियार थे और अन्य गतिविधियां जैसे स्काउट, खेल आदि में भी अग्रणी रहा करते थे। 1950 में बीकानेर में प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर में आए एवं यहीं से उनकी संघ यात्रा का प्रारंभ हुआ। घरेलू परिस्थितियों के कारण दसवीं कक्षा के पश्चात वे अध्यापक के रूप में राजकीय सेवा में चले गए। संघ के प्रति उनकी उसी व्यथा ने उन्हें असाधारण बनाने का मार्ग प्रशस्त किया। सन 1959 में मई माह में हल्दीघाटी उच्च प्रशिक्षण शिविर के दौरान उन्होंने पूज्य तनसिंह जी के सानिध्य में रहने का निर्णय कर लिया। पूज्य तनसिंह जी के साथ रहना कोई सरल कार्य नहीं था क्योंकि वह अपने साथ रहने वालों को सदैव मांजते रहते थे, परिष्कृत करते रहते थे और मार्जन की यह प्रक्रिया कष्टसाध्य होती है। नारायण सिंह जी से पहले भी अनेकों लोग उनके साथ रहे लेकिन इस कष्ट पूर्ण साधना में टिक नहीं सके। पूज्य नारायण सिंह जी अपने संकल्प के धनी थे और उसी के कारण उन्होंने संघ के अनुरूप अपने आप को ढाल लिया था। उन्होंने जीवन का एक भी दिन, शक्ति का एक भी अणु, हृदय का एक भी पवित्र भाव और द्रव्य का एक भी पैसा संघ से छुपा कर नहीं रखा। ऐसा अद्भुत उन्होंने अपना जीवन बना लिया था। हम स्वयं को देखें कि क्या हम इस प्रकार का अपना जीवन बना पाए हैं? क्या हम संघ को अपने जीवन में सर्वोच्च प्राथमिकता दे पाए हैं? इन प्रश्नों पर हम आत्म चिंतन करें और श्रद्धेय नारायण सिंह जी ने जो आदर्श स्वयंसेवक का स्वरूप हमारे सामने रखा उसका अनुकरण करने की ओर हम बढ़े, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। जयपुर स्थित केंद्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' में भी पूज्य नारायण सिंह जी की जयंती समारोह पूर्वक मनाई गई। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि 19 वर्ष की अल्पायु में नारायण सिंह जी ने ऐसा महत्वपूर्ण और जीवन व्यापी निर्णय लिया जैसा कोई साधारण व्यक्ति नहीं ले सकता। इस निर्णय के पश्चात अगले 10 वर्षों तक वे एक स्वयंसेवक के रूप में पूज्य तन सिंह जी के निरंतर साथ रहे। 1969 में बोरुंदा उच्च प्रशिक्षण शिविर में पूज्य तनसिंह जी ने उनको संघ प्रमुख का दायित्व दिया। अगले 10 वर्ष तक वे पूज्य तन सिंह जी के सानिध्य में रहकर संघ प्रमुख का दायित्व निभाते रहे। 1979 में तन सिंह जी के देहावसान के बाद अगले 10 वर्ष तक पुनः स्वतंत्र रूप से संघ प्रमुख का दायित्व निभाते रहे और 1989 में उनका देहावसान हो गया। ऐसा लगता है जैसे एक सुनियोजित क्रम था जिसे वे पूरा करने आए थे। श्री क्षत्रिय युवक संघ में रहते हुए एक आदर्श स्वयंसेवक बने और आदर्श स्वयंसेवक वह बन सकता है जिसने कभी किसी आदर्श स्वयंसेवक का अनुकरण किया हो, आज्ञापालन किया हो। जिसने आज्ञापालन न किया हो वह आज्ञापालन करवा भी नहीं सकता। यह बात नारायण सिंह जी भलीभांति जानते थे। जब वे छात्रावास में रहते थे तभी से डायरी लेखन किया करते थे। उन डायरियो में उनका स्वाध्याय है, आत्मचिंतन है। उसी स्वाध्याय ने उनको साधारणताओं से असाधारणताओं की ओर बढ़ाया। एक आदर्श शिक्षक के रूप में उन्होंने शिक्षण को रोचक बनाया। शिविर की 18 घंटे तक निरंतर चलने वाली कठिन प्रशिक्षण प्रक्रिया को वर्गीकृत करके उन्होंने इस प्रकार से रोचक बनाया कि शिविरार्थी को ऊब ना हो। किसी भी काम को छोटा ना समझ कर प्रत्येक काम को उन्होंने सजगता पूर्वक, निपुणता पूर्वक किया। व्यापार, लेखा आदि कार्य भी इतनी कुशलता से किए कि विशेषज्ञों को भी आश्चर्यचकित कर दें। श्री क्षत्रिय युवक संघ का कार्य ईश्वरीय कार्य है इसे नारायण सिंह जी ने अपने जीवन से सिद्ध किया। आज जब हम नारायण सिंह जी की जयंती मनाकर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित कर रहे हैं, तो ऐसा लगता है, जैसे नारायण सिंह जी स्वयं हम से कह रहे हों कि मैं भी तुम्हारी तरह ही संघ में आया। तुम्हारी तरह ही संघ को भागीरथी माना और मैंने भी इस भागीरथी में डुबकी लगाने का प्रयास किया। लेकिन तुम्हारे और मुझ में यह भेद हैं कि तुमने परिवार आदि को और मैंने संघ को प्राथमिकता दी। इस भेद को यदि हम दूर कर दें तो हम भी नारायणसिंह जी बन जाएंगे। हम इस भागीरथी में डुबकी लगाने का साहस नहीं कर पाते जबकि उन्होंने इसमें गहरे गोते लगाकर मोती प्राप्त कर लिए। जो समस्याएं हमारे सामने हैं वैसी ही उनके सामने भी थी। किंतु जिस प्रकार सीप स्वाति नक्षत्र में बरसने वाली बूंद के अलावा अन्य जल को स्वीकार नहीं करती, उसी प्रकार उन्होंने भी संघ के अतिरिक्त और कुछ स्वीकार नहीं किया। ऐसी अनन्यता और ध्येयनिष्ठा की प्रेरणा हम उनके जीवन से ले सकें तो इसी में उनकी जयंती मनाने की सार्थकता हैं। जैसे नारायण सिंह जी ने मात्र 49 वर्ष की आयु में वह सब कुछ प्राप्त कर लिया जिसके लिए मनुष्य का जन्म मिलता है। हम भी उसी प्रकार ध्येयनिष्ठ बनकर अपने जीवन को सार्थक कर सकें, ऐसा हमारा निरंतर और सजग प्रयत्न होना चाहिए। महाराष्ट्र संभाग के अंतर्गत मुंबई, बेंगलुरु तथा पुणे में वर्चुअल माध्यम से जयंती मनाई गई। उत्तर मुंबई प्रांत के कार्यक्रम को संबोधित करते हुए केंद्रीय कार्यकारी गजेंद्र सिंह आऊ ने कहा कि नारायण सिंह जी का व्यक्तित्व साधारण होते हुए भी अद्भुत था। संभाग प्रमुख नीर सिंह सिंघाना व प्रांत प्रमुख देवी सिंह झलोड़ा ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। पुणे प्रांत के कार्यक्रम में शंभु सिंह सिवाना ने नारायण सिंह जी का जीवन परिचय प्रस्तुत किया तथा बेंगलुरु प्रांत के कार्यक्रम में पवन सिंह बिखरनिया तथा दिग्विजय सिंह डुगोली उपस्थित रहे। जालोर संभाग के आहोर में केंद्रीय कार्यकारी रेवन्त सिंह पाटोदा की उपस्थिति में जयन्ती मनाई गई। उन्होंने कहा कि नारायण सिंह जी के जैसा त्याग और समर्पण हमारे जीवन में भी आ जाये तो हम भी संघ के आदर्श स्वयंसेवक बन जाएंगे। सुमेर सिंह मोरु, विक्रम सिंह रातड़ी, तेजकरण सिंह बालोत, मदन सिंह भैंसवाड़ा ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। संभाग में सिरोही के रेवदर स्थित राजपूत छात्रावास में भी जयंती मनाई गई जिसमें सुमेर सिंह उथमण व ईश्वर सिंह रामसर समाज बंधुओं सहित उपस्थित रहे। भीनमाल के गोपाल राजपूत छात्रावास में भी जयन्ती मनाई गई। पाली स्थित वीर दुर्गादास राजपूत छात्रावास में भी समारोह पूर्वक जयंती मनाई गई जिसमें प्रांत प्रमुख मोहब्बत सिंह धींगाणा, हीर सिंह लोड़ता, महावीर सिंह टेवाली सहित अनेकों समाज बंधु उपस्थित रहे। पाली प्रांत के अंतर्गत गुड़ा चुतरा में तथा सोजत मंडल के झुपेलाव में भी जयंती कार्यक्रम का आयोजन हुआ। सुमेरपुर की महाराणा प्रताप शाखा में भी जयंती मनाई गई जिसमें परबत सिंह खिंदारागांव ने उपस्थित समाज बंधुओं को पूज्य नारायण सिंह जी के गुणों का अनुकरण करने की बात कही। जालौर संभाग में किलवा स्थित आशापुरा माताजी मंदिर के प्रांगण में भी जयंती मनाई गई जिसमें संभाग प्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी तथा प्रांत प्रमुख महेंद्र सिंह कारोला समाज बंधुओं सहित उपस्थित रहे।

मेवाड़-मालवा संभाग के अंतर्गत मध्य प्रदेश के मंदसौर में घसोई (सुवासरा) में भी नारायण सिंह जी की जयंती मनाई गई जिसमें केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली तथा प्रांत प्रमुख गुमान सिंह वलाई समाज बंधुओं सहित उपस्थित रहे। मेवाड़-वागड सम्भाग के डूंगरपुर प्रान्त के गांव गेहूवाड़ा में श्री गातोड़ महाराज के मंदिर परिसर में पूज्य नारायण सिंह जी की जयंती मनाई गई। कार्यक्रम में प्रान्त प्रमुख टैंक बहादुर सिंह गेहूवाड़ा, वागड क्षत्रिय महासभा डूंगरपुर के वरिष्ठ उपाध्यक्ष रणजीत सिंह गेहूवाड़ा, रायसिंह नाहरमंगरा, सहज योग के आध्यात्मिक गुरु लालसिंह शक्तावत तथा वरिष्ठ स्वयंसेवक वदनसिह गेहूवाड़ा ने पूज्य श्री को शब्दार्जलि अर्पित की। प्रतापगढ़ स्थित श्री अंबिका बाणेश्वरी राजपूत छात्रावास में आयोजित जयंती कार्यक्रम में पृथ्वीराज सिंह लांबापारडा, कमल सिंह नौगामा, दिग्विजय सिंह चिकलाड़ तथा होकम सिंह बरोठा ने अपने विचार रखे। मेवाड़ वागड़ संभाग के राजसमंद प्रांत के श्री मुछाला महादेव स्थान पर भी जयंती कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें संभाग प्रमुख भंवर सिंह बेमला तथा बृजराज सिंह खारड़ा स्वयंसेवकों सहित उपस्थित रहे। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

(पृष्ठ छह का शेष)

हम संघ में...

उदयपुर के श्री अलख नयन मंदिर में भी जयंती कार्यक्रम आयोजित हुआ। बांसवाड़ा के डांगपाड़ा छात्रावास भवन में भी जयंती मनाई गई जिसमें वागड़ क्षत्रिय महासभा के पूर्व अध्यक्ष कृष्णपाल सिंह टामटिया, लाखन सिंह लांबापारड़ा, भोपाल सिंह नाहरपुरा तथा हनुवन्त सिंह सज्जन सिंह का गड़ा ने अपने विचार व्यक्त किए। श्री तन सिंह जी एके-डमी न्यू राजपूत होस्टल, बांसवाड़ा में भी जयन्ती मनाई गई। चित्तौड़गढ़ स्थित भूपाल पब्लिक स्कूल के प्रांगण में जयंती कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसे वरिष्ठ सेवक बालू सिंह जगपुरा, सवाई सिंह बिजेरी हर्षवर्धन सिंह रूद (भाजयुमो जिला अध्यक्ष) लाल सिंह भाटियों का खेड़ा (एमडी, भूपाल पब्लिक स्कूल) कान सिंह सुवावा (क्षत्रिय महासंघ) ने संबोधित किया। कोटा में आशापुरा माता मंदिर, दशहरा मैदान में स्वयंसेवकों द्वारा नारायण सिंह जी को श्रद्धांजलि अर्पित की। अजमेर प्रांत के अंतर्गत सावरगढ में नारायण सिंह जी की जयंती मनाई गई जिसमें प्रांत प्रमुख विजय राज सिंह जालिया उपस्थित रहे। इस दौरान सावर, जालिया, डोराई, बिदूसनी, पिपलाज, देवगांव, सापणदा, देवलिया आदि गांवों के समाज बंधु उपस्थित रहे। भीलवाड़ा में भी जयन्ती मनाई गई। बीकानेर स्थित संघ कार्यालय नारायण निकेतन में भी समारोह पूर्वक जयंती मनाई गई जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक भवानी सिंह सुई, संभाग प्रमुख रेवंत सिंह जाखासर तथा प्रांत प्रमुख खींव सिंह सुल्ताना स्वयंसेवकों सहित उपस्थित रहे। बीकानेर संभाग के अंतर्गत ही बज्जू में मुख्य बाजार स्थित बेसिक आईआईटी प्रांगण में भी जयंती कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक गणपत सिंह अवाय उपस्थित रहे। चूरु प्रांत के रतनगढ़ में पायली गांव स्थित ओम बन्ना धाम के सभागार में भी जयंती कार्यक्रम आयोजित हुआ। झंझेऊ शाखा में भी जयंती मनाई गई। बीकानेर संभाग में श्री डूंगरगढ़ स्थित श्री रघुकुल राजपूत छात्रावास में भी जयंती कार्यक्रम का आयोजन हुआ। वरिष्ठ स्वयंसेवक भरत सिंह सेरूणा, संभाग प्रमुख रेवंत सिंह जाखासर, क्षत्रिय सभा के अध्यक्ष व पूर्व प्रधान छैलू सिंह तथा प्रांत प्रमुख भागीरथ सिंह सेरूणा ने कार्यक्रम को संबोधित किया व श्रद्धेय नारायण सिंह जी के व्यक्तित्व व कृतित्व की उपस्थित समाज बंधुओं को जानकारी दी। तनसिंहपुरा व भादला में भी जयन्ती मनाई गई। बाड़मेर संभाग के गडरा रोड प्रांत के अंतर्गत बिजावल गांव में वरिष्ठ स्वयंसेवक कमल सिंह गेहूं की उपस्थिति में नारायण सिंह जी रेडा की जयंती मनाई गई। कार्यक्रम में बिजावल, गड़स, जैसिंधर, पनिया, सिरगुवाला, समधिये का पार आदि गांवों के समाज बंधुओं ने भाग लिया।

संभाग के गुडामालानी प्रांत के बूठ गांव में भी जयंती मनाई गई जिसमें प्रांत प्रमुख गणपत सिंह बूठ, हरि सिंह, बाबू सिंह व रायसिंह उण्डखा ने अपने विचार रखे। बाड़मेर संभाग के चौहटन प्रांत का जयंती कार्यक्रम चौहटन स्थित भवानी क्षत्रिय बोर्डिंग हाउस में संपन्न हुआ जिसमें प्रांत प्रमुख लाल सिंह आकोड़ा स्वयंसेवकों सहित उपस्थित रहे। शिव प्रांत का जयंती कार्यक्रम राव चांपा शिक्षण संस्थान, शिव में मनाया गया। प्रांत प्रमुख धूड़ सिंह कोटडा सहित अनेकों स्वयंसेवक उपस्थित रहे। बालोतरा संभाग के अंतर्गत थोब, कल्याणपुर, बालोतरा, रेवाडा जेतमाल, टापरा, वरिया, सिणधरी, सिवाना, पादरु, चिड़िया, चांदेसरा, नौसर, पाटोदी, गिड़ा इत्यादि स्थलों पर संघ के स्वयंसेवकों एवं राजपूत समाज के लोगो ने पूज्य श्री रेड़ा को स्मरण किया एवं उनके लक्ष्मण समान समर्पण भाव से प्रेरणा लेने का संकल्प लिया। बायतू प्रान्त में चांदेसरा स्थित माँ नागणेशी मंदिर में जयन्ती कार्यक्रम आयोजित हुआ। जैसलमेर संभाग में श्रद्धेय नारायण सिंह जी रेड़ा की जयंती 'तनाश्रम' (जैसलमेर), खुहड़ी, म्याजलार, बेरसियाला, जोगीदास का गांव, झिनझिनयाली, शाखा मैदान मुलाना, मेघराज छात्रावास मोहनगढ़, राजपूत छात्रावास रामगढ़, सोनू, जगदंबा मंदिर पारेवर, राजपूत हॉस्टल पोकरण, देवीकोट तथा सांकड़ा में उल्लासपूर्ण तरीके से मनाई गई। दिल्ली एनसीआर प्रांत में वर्चुअल माध्यम से नारायण सिंह जी की जयंती वरिष्ठ स्वयंसेवक व पूर्व सांसद नारायण सिंह माणकलाव तथा प्रांत प्रमुख रेवत सिंह धीरा की उपस्थिति में मनाई गई। पूर्वी राजस्थान संभाग की जामडोली शाखा व बाढ़ मोचींगपुरा में भी जयन्ती मनाई गई। जोधपुर संभाग में के सभी प्रान्तों में भी नारायण सिंह जी की जयंती उल्लासपूर्वक मनाई गयी। जोधपुर शहर प्रान्त में तनायन कार्यालय, राजेन्द्र नगर, चौपासनी, हनवंत शाखा मैदान व जय भवानी नगर शाखा में कार्यक्रम आयोजित हुए। फलोदी प्रान्त में ओसियां व बाप में तथा शेरगढ़ प्रान्त में शेरगढ़, नाथडाउ व सेतरावा में जयन्ती कार्यक्रम रखे गए। गाजणा माता मंदिर बेलवा में चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के दौरान भी जयन्ती मनाई गयी। नागौर संभाग में बीदासर तहसील के कातर गांव में साधना संगम संस्थान (कुचामन सिटी) के तत्वावधान में नारायण सिंह जी की जयंती समारोह पूर्वक मनाई गई। इस दौरान संभाग प्रमुख शिंभू सिंह आसरवा तथा प्रांत प्रमुख विक्रम सिंह ढींगसरी समाजबंधुओं व स्वयंसेवकों सहित उपस्थित रहे। लाडनू प्रांत के डीडवाना मंडल के अंतर्गत श्री दुर्गा दास राठौड़ छात्रावास में भी जयंती कार्यक्रम का आयोजन हुआ।

नागौर शहर स्थित श्री अमर राजपूत छात्रावास में भी जयंती कार्यक्रम रखा गया जिसमें प्रांत प्रमुख उगम सिंह गोकुल, मारवाड़ राजपूत सभा के नागौर प्रतिनिधि तेज सिंह बालवा तथा भवानी सिंह सिंगड ने अपने विचार रखे तथा छात्रावास के छात्रों को पूज्य नारायण सिंह जी के जीवन से प्रेरणा लेने की बात कही। छापड़ा में भी जयंती कार्यक्रम रखा गया जिसमें श्याम सिंह छापड़ा स्वयंसेवकों सहित उपस्थित रहे। संभाग के सभी जयंती कार्यक्रम साधना संगम संस्थान (कुचामन सिटी) के तत्वावधान में संपन्न हुए। गुजरात के मध्य गुजरात संभाग के सूरत प्रांत में गोडादरा मण्डल की वीर दुगार्दास शाखा में जयंती कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें प्रांत प्रमुख खेतसिंह चांदेसरा स्वयंसेवकों सहित उपस्थित रहे। सारोली मण्डल द्वारा तनेराज शाखा में भी जयन्ती कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें मण्डल प्रमुख अजीतसिंह कुकनवाली स्वयंसेवकों सहित उपस्थित रहे। अहमदाबाद ग्रामीण प्रान्त में काणेटी मण्डल में दरबार समाजवाड़ी व दरबारी चोरो में, साणंद मण्डल के रामजी मंदिर गोहिलसेरी व पिंपण मण्डल के दरबारी चोरो में जयंती मनाई गई जिसमें संभाग प्रमुख दीवान सिंह काणेटी, हंसाबा काणेटी, बटुकसिंह काणेटी व अनिरुद्ध सिंह काणेटी ने श्रद्धेय नारायण सिंह जी के प्रति शब्दांजलि अर्पित की। अहमदाबाद शहर प्रांत के मेघाणीनगर स्थित अम्बिका नगर सोसायटी के अम्बाजी मंदिर प्रांगण में संपन्न कार्यक्रम को दीवान सिंह काणेटी व राजपूत विद्या सभा के दिलीप सिंह पेढेरिया ने संबोधित किया। चरोतर प्रांत के आनंद मण्डल में आनंद शहर के आर्य मंदिर में कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें योगेंद्र सिंह काणेटी स्वयंसेवकों सहित उपस्थित रहे। गांधीनगर प्रांत के पालज गांव स्थित महाकाली माताजी मंदिर में संभाग प्रमुख दीवान सिंह काणेटी की उपस्थिति में कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीर सिंह हरदासकाबास, गांधीनगर निगम के नेता प्रतिपक्ष शैलेंद्र सिंह पालज व बिहोला राजपूत समाज प्रमुख जिलूसिंह मगोड़ी भी समाजबंधुओं सहित उपस्थित रहे। जयदीप सिंह अवाणियां ने कार्यक्रम का संचालन किया। गोहिलवाड़ संभाग के भावनगर शहर प्रांत और खोडियार प्रांत ने संयुक्त रुप से पूज्य नारायण सिंह जी की जयंती नारी गांव के क्षत्रिय समाज भवन में मनाई। संघ के केंद्रीय कर्मचारी महेंद्र सिंह पांची ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि नारायण सिंह जी ने पूज्य तनसिंह जी के निदेर्शों तथा आज्ञाओं का यथारूप पालन करके तपस्वियों के लिए भी दुर्लभ योग की सिद्धि प्राप्त कर ली। उन्होंने अपने जीवन से यह प्रमाणित कर दिया कि संघ का कार्य ईश्वरीय कार्य है। हम सब भी निष्ठा पूर्वक इस कार्य को करें तो हमारे लिए भी ईश्वर प्राप्ति का मार्ग खुल जायेगा। भावनगर शहर प्रांत प्रमुख भागीरथ सिंह सांडखाखरा ने पूज्य नारायण सिंह जी का जीवन परिचय प्रस्तुत किया। भुरुभा तथा भगवत सिंह नारी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन सुरूभा नारी ने किया। उत्तर गुजरात संभाग के पाटन प्रांत के अंतर्गत मोटीचंदुर तथा पाटन में जयंती मनाई गई। जाड़ी तहसील के धानेरा तथा पीलूड़ा के शैक्षणिक संकुल में भी जयंती कार्यक्रम आयोजित हुए। सौराष्ट्र कच्छ संभाग के अंतर्गत गोंडल, गांधीधाम, गोदावरी तथा मोढवाणा में श्रद्धेय नारायण सिंह जी की जयंती मनाई गई। गुजरात के गोहिलवाड़ संभाग के मोरचंद प्रांत के खडसलिया तथा अवाणीया गांव में जयन्ती मनाई गई। भाल प्रांत के अंतर्गत पांची, धोलेरा तथा वल्लभीपुर जयन्ती मनाई गई। मोरचंद की महिला शाखा में भी जयन्ती मनाई गई। दियोदर स्थित राजपुत छात्रावास में भी जयन्ती मनाई गई। बनासकांठा प्रान्त के भीलाचल तथा रजोसण में 01 अगस्त को नारायण सिंह जी रेडा की स्मृति में कार्यक्रम रखे गए।

ओसियां राजपूत प्रतिभा सम्मान समारोह सम्पन्न

ओसियां में स्थानीय राजपूत समाज द्वारा उपखंड स्तरीय प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन रविवार, 9 अगस्त को राजपूत छात्रावास परिसर ओसियां में किया गया। सैनिक कल्याण बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष श्री प्रेम सिंह जी बाजौर के आतिथ्य में संपन्न इस कार्यक्रम समाज के नव निर्वाचित सरपंचों, उपसरपंचो और नव चयनित आर ए एस अधिकारियों को सम्मानित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि श्री बाजौर ने कहा कि आज के समय में हमारी बेटियों का पढ़ना बहुत जरूरी है। शिक्षित और सुसंस्कृत नारी समाज की धुरी होती है इसलिए समाज के सभी जिम्मेदार लोगों को इस विषय में काम करना चाहिए। राजस्थान बीज निगम के पूर्व अध्यक्ष शम्भु सिंह जी खेतासर ने भी सभी से बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने का आव्हान किया। राजपूत छात्रावास संस्थान के पूर्व अध्यक्ष श्री गोपाल सिंह जी भलासरिया ने ओसियां क्षेत्र में बालिका छात्रावास की आवश्यकता बताई तथा वहा मौजूद समाज के भामाशाहों से सहयोग का आह्वान किया। इस पर मौजूद भामाशाहों ने बालिका छात्रावास के लिए 4 बीघा जमीन तथा 10 लाख की सहयोग राशि देने का संकल्प लिया। संस्थान के कोषाध्यक्ष श्री हुक्म सिंह जी पड़ासला ने वर्ष 2020-21 का लेखा जोखा प्रस्तुत किया। इस अवसर पर अनेकों जन प्रतिनिधियों तथा गणमान्य लोगों सहित लगभग 300 समाज बन्धुओं ने भाग लिया।

बाड़मेर में महिला स्नेहमिलन

संघ के महिला विभाग द्वारा 2 अगस्त की शाम 4:00 बजे बालिका शिविरों की प्रशिक्षिका एवं पूज्य तनसिंह जी की सुपुत्री जागृति बाईसा के सानिध्य में बाड़मेर में संभागीय महिला स्नेहमिलन का आयोजन किया गया। जागृति बाईसा ने उपस्थित महिलाओं को संबोधित करते हुए बताया कि आज की बालिकाएं भविष्य की भावी माताएं हैं, भविष्य की पीढी की निमार्ता हैं इसलिए उन्हें अपनी इस भूमिका के लिए यथोचित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। श्री क्षत्रिय युवक संघ का महिला विभाग बालिकाओं को एक महिला के रूप में समाज में उनकी श्रेष्ठतम भूमिका का अहसास करवाता है एवं उसका यथोचित प्रशिक्षण भी देता है।

डीडवाना में युवा मार्गदर्शन एवं कैरियर गाईडेंस कार्यशाला संपन्न

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की नागौर टीम व डीडवाना के श्री हिम्मत छात्रावास मैनेजिंग कमेटी की शिक्षा समिति के संयुक्त तत्वाधान में 8 अगस्त रविवार को वीरवर दुगार्दास राजपूत सभा भवन में युवा मार्गदर्शन एवं केरियर गाईडेंस कार्यशाला संपन्न हुई।

कार्यशाला में 12 वीं से ऊपर अध्ययनरत विद्यार्थी एवं विभिन्न नौकरियों की तैयारी कर रहे युवा शामिल हुए। समाज के प्रशासनिक अधिकारियों के निर्देशन में संपन्न इस कार्यशाला में युवाओं को रोजगार के विभिन्न अवसरों की जानकारी दी गई एवं उनके केरियर संबंधी विभिन्न प्रश्नों का समाधान किया गया।

दिलीप सिंह बच्छवारी को पत्नी शोक

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक एवं अधिवक्ता संघ डेगाना के अध्यक्ष दिलीप सिंह बच्छवारी की धर्मपत्नी **श्रीमती सोहन कंवर** का 27 जुलाई को दुःखद निधन हो गया। परमेश्वर से प्रार्थना है कि वे दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देवें एवं शोक संतप्त परिवार को इस आघात को सहने की क्षमता प्रदान करें।

श्रीमती सोहन कंवर

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

श्रीमती बीनू देवल

राजस्थान प्रशासनिक सेवा 2018
के हाल ही में घोषित परिणामों में

श्रीमती बीनू देवल

पुत्री श्री गजेन्द्रसिंह गांव-करड़ा
को रैंक 8वीं एवं

श्री पुष्पेन्द्र सिंह देवल

पुत्र श्री मुकन सिंह गांव-डोरड़ा को
रैंक 501वीं प्राप्त कर पूरे क्षेत्र एवं
समाज का नाम रोशन करने पर

पुष्पेन्द्र सिंह देवल

हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएं।

शुभेच्छु:

केरसिंह सोलंकी
ठिकाना-सेवाड़ा

डॉ. शैतान सिंह भूतेल
(ग्रुप ऑफ कॉलेजेस)

अर्जुन सिंह देवल
ठिकाना डाडोकी

विक्रम सिंह देवल
ठिकाना उचमत

एडवोकेट श्रवण सिंह देवड़ा
ठिकाना बांकली

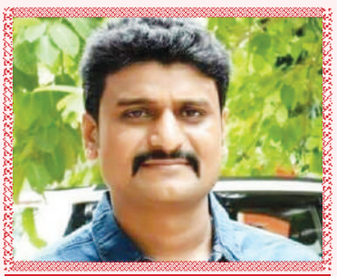

विक्रम सिंह देवल
ठिकाना रोड़ा

गंगा सिंह देवड़ा
ठिकाना सुरावा

तनुसिंह देवड़ा ठिकाना रानीवाड़ा
कल्ला (संस्थापक-भगवा क्रांति)

शैतान सिंह P देवड़ा
ठिकाना जाखड़ी

वीरसिंह M सोलंकी
ठिकाना सेवाड़ा

**एवं समस्त
स्वयंसेवक,
रानीवाड़ा मंडल,
जालोर**

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org